ISSN : 2393-8358

UGC Approved, Journal No. 48416 (IJCR)
Impact Factor : 2.314

Interdisciplinary Journal of Contemporary Research

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 7, No. 7 July, 2020

PEER-REVIEWED JOURNAL

PRINCIPAL
S.S.G. PAREEK PG COLLEGE
JAIPUR (RAJASTHAN)

UGC Approved, Journal No. 48416 (IJCR), Impact Factor 2.314 ISSN : 2393-8358

Interdisciplinary Journal of Contemporary Research

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 7, No. 7 July, 2020

PEER REVIEWED JOURNAL

EDITOR

Dr. H.L. Sharma
Associate Professor
Shimla, Himachal Pradesh

Dr. Hans Prabhakar Ravidas
Assistant Professor
Department of Performing Arts,
National Sanskrit University, Tirupati

Dr. Anil Kumar
Assistant Professor, Department of History
Rajdhani College, University of Delhi

Published by
VPO Nandpur, Tehsil-Jubbal, District-Shimla, Himachal Pradesh
email : ijcrournal971@gmail.com, Website : ijcrjournals.com

PRINCIPAL
S.S.G. PAREEK PG COLLEGE
JAIPUR (RAJASTHAN)

☞	जनसंख्या वृद्धि, निर्धनता एवं रोजगार सृजन उत्तराखण्ड के विशेष सन्दर्भ में **डॉ0 अंजनी प्रसाद दूबे**	65-68
☞	परंपरागत कुटीर उद्योग की आर्थिक स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन **बनमाली यादव**	69-74
☞	स्त्री विमर्श का नया चेहरा : अल्मा कबूतरी **चन्द्रभूषण कुमार**	75-77
☞	खिलाफत एवं असहयोग आन्दोलन में कांग्रेस और लीग की भूमिका **डॉ0 अखिलेश कुमार सिंह**	78-80
☞	ऋग्वैदिक सामाजिक–आर्थिक और धार्मिक स्थिति का संक्षिप्त परिचय **डॉ0 विकास चन्द्र**	81-84
☞	स्वदेशी आग्रह बनाम विदेशी निवेश **डॉ0 विवेक कुमार निगम**	85-92
☞	नारी शक्ति को जगाने में जयप्रकाश नारायण का विचार **सत्येन्द्र प्रसाद**	93-94
☞	देवरिया जनपद का भूमि उपयोग प्रतिरूप **डॉ0 दुर्गेश मणि त्रिपाठी**	95-100
☞	ना द ब्रह्म, समग्र सृष्टि **डॉ0 गायत्री शर्मा**	101-104
☞	Customers Choice and Satisfaction towards Jewellery-Outlets In Gorakhpur City Of Uttar Pradesh **Dr. Amarendra Kumar Yadav**	105-110
☞	डॉ0 भीम राव अम्बेडकर का धार्मिक दर्शन **डॉ0 मुशीर अहमद**	111-116
☞	बिहार के गौरवभय पर्यटन केन्द्र वैशाली के विकास में समस्याओं एवं संभावनाओं का एक भौगोलिक अध्ययन **डॉ0 विजय कुमार**	117-121
☞	औपनिवेशिक बांदा में सविनय अवज्ञा आन्दोलन (1932–34) भाग लेने वाले प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी **डॉ0 आदित्य नरायण सिंह**	122-124
☞	Sri Aurobindo's *Savitri* as a Colossal Epic **Dr. Rajeshwar Prasad**	125-126
☞	भारतीय नृत्यकला में आधुनिकता से समकालीनता **डॉ0 अजयकुमार मच्छिंद्रनाथ संवने**	127-129
☞	Quest for Identity in *The Shadow Lines* **Subhadra Kumari**	130-132
☞	Anita Desai's *Cry, the Peacock:* A Psychoanalytical Study **Dr. Brajesh Kumar**	133-134
☞	हिन्दी दलित साहित्य का लेखक, पाठक और प्रिंट संस्कृति से संबध **डॉ0 यशवंत वीरोदय**	135-136

PRINCIPAL
S.S.G. PAREEK PG COLLEGE
JAIPUR (RAJASTHAN)

UGC Approved Journal No. 48416
Interdisciplinary Journal of Contemporary Research, Vol. 7, No. 7, July, 2020
Impact Factor 2.314
ISSN 2393-8358

ना द ब्रह्म, समग्र सृष्टि

डॉ. गायत्री शर्मा
पीएचडी. नेट., डागर घराना

वर्तमान में अगर हम संगीत के किसी भी गोष्ठी में शामिल होते हैं तो एक शब्द अवश्य सुनने में आता है वह है नाद ब्रह्म। बहुत ही पावन ता और गूढता की ओर इंगित करता है यह शब्द। एक दिन में विचार मन में आता है की नाद ब्रह्म के बारे में विस्तृत चर्चा होनी चाहिए परंतु समय की पाबंदी और कार्यक्रम की रूपरेखा को देखते हुए कुछ शब्द इस पर कहकर दी गई जानकारी पिपासु के मुख में दो बूंद जल के समान महसूस होती है। फिर रा गों और स्वरों से अठखेलियां करता कलाकार मनोरंजन व रसात्मक ता से उस जिज्ञासा पर एक परत चढ़ा देता है। फिर वही जिज्ञासा कहीं और उठती है और शांति पा लेती है नाद ब्रह्म के आसपास के शब्दों से। वास्तव में क्या है नाद ब्रह्म क्यों बार-बार प्रारंभ में इसी शब्द को दोहराया जाता है।

संगीत के प्रमुख ग्रंथों में हम नाद के बारे में विस्तृत विवरण प्राप्त करते हैं। सभी ग्रंथों में ना द को ईश्वरीय बताया गया है, अर्थात नादब्रहमा के समान विस्तृत है, विष्णु के समान तेजोमय भगवान और श्री महेश के समान योगी। नारद कृत नारदीय शिक्षा हो चाहे मतंग मुनि कृत व्रहदेशीय, पंडित शारंग देव कृत संगीत रत्नाकर हो या लोचन कृत राग तरंगिणी सभी में नाद को ब्रहमा के तुल्य माना है। नाद से ही सृष्टि का निर्माण हुआ है। परम पुनीत नाद आह त से अनाहत को प्राप्त होता है तथा अनाहत से आहत की प्रेरणा पाता है।

नाद रुप: स्मृतो ब्रहमा नाद रूपो जनार्दन:।
नाद रूपा परा शक्तिरनाद रूपो महेश्वर:।।

मतंगमुनिकृत वृहदेशीय,

ब्रहमा, विष्णु, महेश ओर आदि शक्ति सभी नाद रूप है अर्थात नाद ही समस्त जगत में शक्ति रूप में विद्यमान है तथा नादोपासना ही सच्ची उपासना है ।नाद से तात्पर्य संगीतोपयोगी ध्वनि से है ।नाद दो प्रकार के होते हैं एक आहत और दूसरा अनाहत।

हमारे संगीत मनीषियों ने आहत के माध्यम से अनाहत को प्राप्त किया तथा संगीत की महत्ता को सिद्ध किया। अनाहत नाद हमारे शरीर की गहराइयों में स्वत:गुंजायमान होता है ,आहत नाद को प्रयत्न और आघात से प्राप्त किया जाता है ।

सगुण और निर्गुण का भी यही भेद है ।अनाहत नाद निर्गुण नाद है और आहत नाद सगुण।

आत्मा विवक्षमनो अयम मन: प्रेरयते मन:।
देहस्थम वाहग्नी महांती स प्रेरयती मारूतम।।
ब्रहम ग्रंथि स्थित: सो अथ क्रमा दूर्ध् व पथे चरन।
नाभि ह्रद कंठ मूर्धा स्येष वा वि र्भा वय ति ध्वनि तम।
संगीत रत्नाकर प्रथम खंड पृ., सं,64

"आत्मा मन को प्रेरित करती है मन देह में स्थित अग्नि का आहवान करता है, अग्नि से वायु को प्रेरणा मिलती है ब्रहम ग्रंथि में स्थित वायु क्रम श: ऊर्ध्व मार्ग की ओर संचरण कर ता हुई नाभि, ह्रदय, कंठ और मुरधा में ध्वनि का आविर्भाव करता है।" मुख के दवारा यह ध्वनि बाहर आकर आहत नाद की उत्पत्ति करती है जिसको हम वार्ता या संगीत के रूप में सुनते हैं।

इस आहत नाद के नियमित अभ्यास तथा मन को एकाकार करके हम अनाहत नाद को महसूस कर सकते हैं । मनुष्य चाहे मंत्रोच्चारण करें या वार्तालाप हर स्थिति में संगीत के तत्व मौजूद रहते हैं कहीं ताल के रूप में तो कहीं स्वर के रूप में कहीं शब्दों की नजाकत के रूप में संगीत हर जगह विद्यमान रहता है और नाद उसका आधार होता है।

PRINCIPAL
S.S.G. PAREEK PG COLLEGE
JAIPUR (RAJASTHAN)

UGC Approved, Journal No. 49321
Impact Factor : 5.427

ISSN : 0976-6650

शोध दृष्टि

Shodh Drishti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 11, No. 8 August 2020

PEER REVIEWED JOURNAL

PRINCIPAL
S.S.G. PAREEK PG COLLEGE
JAIPUR (RAJASTHAN)

UGC Approved Journal No. 49321 Impact Factor : 5.427 ISSN : 0976-6650

Shodh Drishti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 11, No. 8 Year - 11 August, 2020

PEER REVIEWED JOURNAL

Editor in Chief
Prof. Abhijeet Singh

Editor
Prof. Vashistha Anoop
Department of Hindi
Banaras Hindu University
Varanasi

Dr. K.V. Ramana Murthy
Principal
Vijayanagar College of Commerce
Hyderabad

Dr. Anil Kumar
Assistant Professor, Department of History
Rajdhani College, University of Delhi

PRINCIPAL
S.S.G. PAREEK PG COLLEGE
JAIPUR (RAJASTHAN)

Published by
SRIJAN SAMITI PUBLICATION
VARANASI
E-mail : shodhdrishtivns@gmail.com, Website : shodhdrishti.com, Mob. 9415388337

UGC Approved Journal No. 49321
Shodh Drishti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal) Vol. 11, No. 8, August, 2020
Impact Factor : [illegible]
ISSN 0976-6650

☞	प्रेम और संवेदना के कवि : जानकीवल्लभ शास्त्री राज नारायण सिंह	63-66
☞	वाल्मीकिरामायणे राज्ञः कर्तव्यम् विपिनकुमारद्विवेदी	67-70
☞	आत्मनिर्भर भारत : चुनौतियां एवं समाधान डॉ0 विवेक कुमार निगम	71-77
☞	गीत से प्रबन्ध तक डॉ0 गायत्री शर्मा	78-80
☞	बिहार में छठीं शताब्दी ईसा पूर्व में भाषा तथा साहित्य की ऐतिहासिकता अजय कुमार भारती	81-84
☞	हिन्दी के आंचलिक उपन्यास डॉ0 अजय कुमार दास	85-89
☞	महराजगंज जनपद में साक्षरता का क्षेत्रीय प्रतिरूप डॉ0 दुर्गेश मणि त्रिपाठी	90-94
☞	कोरोना वायरस 'लॉकडाउन' आपदा प्रबंधन और मीडिया की भूमिका (ऑनलाइन सर्वे एवं साक्षात्कारों पर आधारित विश्लेषण के साथ) डॉ0 नीलम राठी	95-114
☞	भारत चीन संबंधों का मूल्यांकन डॉ0 ऋचा सिंह	115-118
☞	चंदौसी क्षेत्र की गुप्त कालीन बौद्ध प्रस्तर प्रतिमाओं का अध्ययन डॉ0 बृजेश रावत	119-124
☞	प्रगतिवाद से प्रभावित साहित्यकारों के दलित सरोकार डॉ0 यशवंत वीरोदय	125-128
☞	गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ एवं उनका निदान चेतना	129-132
☞	झारखण्ड में पंचायती राज व्यवस्था का अनुसूचित जनजाति की महिलाओं पर प्रभाव लीना कुमारी एवं डॉ0 दिलीप कुमार	133-138
☞	جوش مَلیح آبادی کی مرثیہ نگاری سید محمد مسلم	139-142
☞	महिला सशक्तिकरण में पंचायती राज की सहभागिता डॉ0 सुधीरा कुमारी	143-148
☞	ग्रामीण प्रगति का आधार : मनरेगा डॉ0 रामपाल कुशवाहा	149-152
☞	समावेशी शिक्षा में बाधाएं एवं उनके समाधान – एक विश्लेषण सुषमा सिंह	153-158
☞	महुआ चरित उपन्यास में सामाजिक–राजनैतिक यथार्थ : स्त्री मुक्ति के परिप्रेक्ष्य में मक्खन लाल सोनकर	159-162

PRINCIPAL
S.S.G. PAREEK PG COLLEGE
JAIPUR (RAJASTHAN)

UGC Approved Journal
Shodh Drishti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal), Vol. 11, No. 8, August, 2020
Impact Factor
ISSN 0976-6650

गीत से प्रबन्ध तक

डॉ0 गायत्री शर्मा

भारतीय संगीत के इतिहास में कितनी ही गायन शैलियाँ दृष्टिगोचर होती है। कंठ संगीत में सर्वप्रथम पहचान व प्रचार में 'गान' शब्द को लिया जा सकता है। सामवेद में गायन की प्रक्रिया को ही गान कहा गया है। गान यानि कि गाना गाने की प्रक्रिया अथवा यूं भी कहा सकते हैं कि गीत का एक प्रकार। संगीत रत्नाकर में गीत के दो भेद बताऐ गये हैं।

प्रथम – गांधर्व

द्वितीय – गान

अनादि सं प्रदायं यदगन्धर्वः संप्रयुज्यते

नियतं श्रेयसो हेतुस्तद्गान्धर्व जगुर्षाधाः।[1] (सं.र.)

रत्नाकर के इस श्लोक में स्पष्ट कहा गया है कि जो मनुष्यों द्वारा ना रचा गया हो अपितु गांधर्वों द्वारा रचित हो, जो लौकिक सुख, स्वर्ग और मोक्ष को प्रदान करने वाले हो वही गुणी जनों द्वारा गांधर्व संज्ञा को प्राप्त हुआ। संगीत के प्राचीन ग्रंथों में गांधर्व को संगीत का सूचक माना गया है। नाट्य शास्त्र में नाटक की कथा शुरु होने पहले एक विशिष्ठ गीत प्रयुक्त होता था वह गांधर्व कहलाता था। नियमबद्धता व संगीत के तीनों घटकों से यह परिपूरित था। "गांधर्व में स्वरुप की दृष्टि से दवर पक्ष में दो ग्रामों का भेद जाति और अंश का भेद, स्वर की लोपावधि, एक स्थान में कम से कम 5 स्वरों का प्रयोग, नियत अलंकारों का ही प्रयोग 14 मूर्छना 84 शुद्धतानों की मर्यादा का नियम अनिवार्य और अपरिवर्तनीय था।"[2]

इससे लगता है रागों में जो नियम प्रयुक्त होते हैं वे गांधर्व में भी थे। जिस तरह राग की जाति, उसके अलंकार उसकी पूर्णता के लिए कम से कम 5 स्वरों का इस्तेमाल होना आदि नियम होते है उसी प्रकार गांधर्व में भी यह नियमबद्धता थी। गांधर्व हाथ की क्रियाओं पर आधारित ताल का प्रयोग, यति, ग्रह लय, मार्ग आदि को नियत ढंग से प्रयोग में लेना अनिवार्य था। यह गांधर्वों द्वारा रचित गीत अदृश्य फल की प्रधानता के साथ–साथ जन रंजनात्मकता से सराबोर सामाजिक आनंद भी प्रदान करता था।

पं. शारंग देव की गांधर्व की व्याख्या अभिनव की व्याख्या से प्रभावित है अभिनव ने गांधर्व को सामवेद से उत्पन्न होने के कारण अनादि काल से प्रचलित माक्ष को देने वाला विशिष्ट नियम युक्त, और गंधर्वों का प्रिय कहा है। गायन शुरु होने से पूर्व किया जाने वाला पवित्र मंत्रोच्चार गांधर्व है जो कि नियम बद्धता को स्वयं में समाहित किए हुए है।

"यत् वाग्येय कारेण रचितं लक्षणान्वितम्।
देशी रागादिषु प्रोक्तं तद्गानं जनरञजनम्।"[3]

वाग्येयकार द्वारा देशीरागों में रचित रचना जो कि मनोरंजन की दृष्टि से महत्वपूर्ण हो उसे गान कहा गया है। गान पौरूषेय है क्योंकि वाग्येयकारों द्वारा रचित है। गान में गांधर्व की भांति कड़े नियमों को समाहित नहीं किया गया। स्वर, ताल, पद तीनों घटक समान रूप से समाहित होते हैं परन्तु किंचित परिवर्तनीय भी होता है। संगीत रत्नाकर के प्रबन्धाध्याय में पंडित शारंगदेव ने स्पष्ट किया है कि गाने नाट्य के अंतर्गत विभिन्न परिस्थितियों, इस भाव स्थितियों और पात्रों की प्रकृति के अनुसार और अनुरुप प्रयोग किये जाने वाले रंजकता प्रधान गीत वे, जो ध्रुवायी कहलाते हैं।

"गान में अर्थ बोध की दृष्टि से पद प्रधान और स्वर उसका उपरंजक होने से गौण है।"[4]

इस प्रकार गांधर्व और गान दोनों गीत के ही भिन्न प्रकार है परन्तु दोनों में स्वरुप, फल, काल और धर्म की दृष्टि से अंतर दृष्टिगोचर होते हैं। गांधर्व व गान दोनों को क्रमशः मार्ग संगीत और देशी संगीत के अंतर्गत रखा जा सकता है।

गांधर्व तथा गान की व्याख्या के पश्चात गान के दो भेदों का विस्तृत विवरण आवश्यक है क्यों कि इन्हीं में से प्रबन्ध के अंकुर का प्रस्फुटन हुआ है।

गान को दो भागों में विभक्त किया गया है –

1. अनिबद्ध गान
2. निवद्धगान

"निबद्धम निबद्ध तद द्वेधा निगदितं बुधैः।"[5]

PRINCIPAL
S.S.G. PAREEK PG COLLEGE
JAIPUR (RAJASTHAN)